दैनिक जागरण नई दिल्ली, २ अप्रैल, 2023

शिक्षा में गतिविधि कार्यों का महत्व

गतिविधि आधारित शिक्षा एक ऐसी शिक्षा पद्धति है जहाँ विषय को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से समझाया जाता हैं। गतिविधि शिक्षा पद्धति विषय को अधिक रोचक एवम सरल बनाती हैं। गतिविधि आधारित शिक्षा छात्रा को अपना कार्य स्वम करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह सीखने का एक रोचक तरीका हैं जो निरंतर प्रोत्साहन और त्वरित प्रतिक्रिया देकर बच्चों में मस्तिष्क का विकास करता हैं। क्वींस कार्मेल स्कूल अपने टीच नेक्स्ट पाठ्यक्रम एवम् कार्यपत्रक अर्थात वर्कशीट से बार–बार के अभ्यास कार्यों के द्वारा उन्हें स्वयं कार्य सम्पन्न करने को प्रेरित करता हैं।

उपलब्धि एवं आत्मविश्वास

गतिविधि आधारित शिक्षा के प्री–प्राइमरी और प्राइमरी और जूनियर स्तर पर अनेक लाभ हैं। बच्चे गतिविधि आधारित शिक्षा के कारण छात्र नित्य विद्यालय आने के लिए उत्साहित रहते है। यह सत्य है की सभी बच्चे एक ही समय एक ही तरह से नही समझते सबकी सीखने की क्षमता तथा रूचि अलग–अलग होती है। यह पद्धति बच्चे को स्वयं के प्रयासों से अपनी गति से सीखने के लिए प्रेरित करती है। प्रत्येक परियोजना कार्य को पूरा करने के बाद बच्चा उपलब्धि की भावना महसूस करता है। छात्रा की हर उपलब्धि उसे प्रेरित करती है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं और अपनी क्षमताओ पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

समाजिकता की भावना का विकास

गतिविधि आधारित शिक्षा का एक आम तरीका समूह कार्य या समूह चर्चा के माध्यम से होता है। छात्राओं को समूह में विभाजित कर कुछ कार्य सौपें जाते हैं, उन्हें आपस में बातचीत कर समस्या को हल करने का प्रयास करना होता है। इससे उनमे समाजिकता तथा समूह में कार्य करने की भावना का विकास होता है।

उचित शिक्षण विधि का चयन

प्रत्येक व्यक्ति के बचपन में सिखने की अधिकतम क्षमता होती हैं क्योंकि 90 प्रतिशत मष्तिष्क का विकास 5 वर्ष की आयु में हो जाता हैं। 8 वर्ष की आयु तक का मस्तिष्क सर्वाधिक और तेजी से सीखने की क्षमता रखता हैं। यही समय बच्चों को पढ़ाने की सही विधि एवं रणनीति चुनने की आवश्यकता पर बल देता हैं ताकि उनकी क्षमता का बेहतर उपयोग हो सके। शोध यह बताते हैं की इस काल में ही गतिवधि आधारित शिक्षा सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षा से लाभ

हर बच्चा अपनी विशिष्ट क्षमताएं लिए हुए होता हैं वह स्वभाव से चंचल परन्तु सहज होता हैं। बच्चे के ध्यान को केन्द्रित करने तथा उनकी क्षमताओं का सर्वांगीण विकास के लिए गतिविधि आधारित शिक्षा (एबीएल) अनिवार्य रूप से उन सर्वोतम तरीकों में से एक हैं जिससे बच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकता है और उसे बनाए रख सकता हैं। एक पुराणी कहावत हैं की "मैं देखता हूँ और भूल जाता हूँ, मैंने देखा है और मुझे याद हैं,मैं करता हूँ और समझता हूँ"। गतिविधि शिक्षा विधि के द्वारा बच्चों को प्रयोगों के माध्यम से सीखते हैं और समझते हैं यह शिक्षण विधि छात्राओं की रचनात्मकता के विकास में सहभागी होती हैं। क्वींस कार्मेल स्कूल भी अपनी छात्राओं को सर्वगुण सम्पन्न बनाने एवम् उनके सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयासरत हैं।

शिक्षा में गतिविधि कार्यों का महत्व

गतिविधि आधारित शिक्षा एक ऐसी शिक्षा पद्धति है जहाँ विषय को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से समझाया जाता हैं। गतिविधि शिक्षा पद्धति विषय को अधिक रोचक एवम सरल बनाती हैं। गतिविधि आधारित शिक्षा छात्रा को अपना कार्य स्वम करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह सीखने का एक रोचक तरीका हैं जो निरंतर प्रोत्साहन और त्वरित प्रतिक्रिया देकर बच्चों में मस्तिष्क का विकास करता हैं। क्वींस कार्मेल स्कूल अपने टीच नेक्स्ट पाठ्यक्रम एवम् कार्यपत्रक अर्थात वर्कशीट से बार–बार के अभ्यास कार्यों के द्वारा उन्हें स्वयं कार्य सम्पन्न करने को प्रेरित करता हैं।

उपलब्धि एवं आत्मविश्वास

गतिविधि आधारित शिक्षा के प्री–प्राइमरी और प्राइमरी और जूनियर स्तर पर अनेक लाभ हैं। बच्चे गतिविधि आधारित शिक्षा के कारण छात्र नित्य विद्यालय आने के लिए उत्साहित रहते हैं। यह सत्य है की सभी बच्चे एक ही समय एक ही तरह से नही समझते सबकी सीखने की क्षमता तथा रूचि अलग–अलग होती है। यह पद्धति बच्चे को स्वयं के प्रयासों से अपनी गति से सीखने के लिए प्रेरित करती है। प्रत्येक परियोजना कार्य को पूरा करने के बाद बच्चा उपलब्धि की भावना महसूस करता है। छात्रा की हर उपलब्धि उसे प्रेरित करती है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं और अपनी क्षमताओ पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

समाजिकता की भावना का विकास

गतिविधि आधारित शिक्षा का एक आम तरीका समूह कार्य या समूह चर्चा के माध्यम से होता है। छात्राओं को समूह में विभाजित कर कुछ कार्य सौपें जाते हैं, उन्हें आपस में बातचीत कर समस्या को हल करने का प्रयास करना होता है। इससे उनमे समाजिकता तथा समूह में कार्य करने की भावना का विकास होता है।

उचित शिक्षण विधि का चयन

प्रत्येक व्यक्ति के बचपन में सिखने की अधिकतम क्षमता होती है क्योंकि 90 प्रतिशत मष्तिष्क का विकास 8 वर्ष की आयु में हो जाता हैं। 8 वर्ष की आयु तक का मस्तिष्क सर्वाधिक और तेजी से सीखने की क्षमता रखता हैं। यही समय बच्चों को पढ़ाने की सही विधि एवं रणनीति चुनने की आवश्यकता पर बल देता हैं ताकि उनकी क्षमता का बेहतर उपयोग हो सके। शोध यह बताते हैं की इस काल में ही गतिवधि आधारित शिक्षा सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षा से लाभ

हर बच्चा अपनी विशिष्ट क्षमताएं लिए हुए होता हैं वह स्वभाव से चंचल परन्तु सहज होता हैं। बच्चे के ध्यान को केन्द्रित करने तथा उनकी क्षमताओं का सर्वांगीण विकास के लिए गतिविधि आधारित शिक्षा (एबीएल) अनिवार्य रूप से उन सर्वोतम तरीकों में से एक हैं जिससे बच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकता है और उसे बनाए रख सकता हैं। एक पुराणी कहावत है की "मैं देखता हूँ और भूल जाता हूँ, मैने देखा है और मुझे याद हैं,मैं करता हूँ और समझता हूँ"। गतिविधि शिक्षा विधि के द्वारा बच्चों को प्रयोगों के माध्यम से सीखते है और समझते हैं यह शिक्षण विधि छात्राओं की रचनात्मकता के विकास में सहभागी होती हैं। क्वींस कार्मेल स्कूल भी अपनी छात्राओं को सर्वगुण सम्पन्न बनाने एवम् उनके सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयासरत हैं।